International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 26-12-2020; Accepted: 14-01-2021; Published: 22-02-2021
www.hindijournal.com
Volume 7; Issue 1; 2021; Page No. 62-64

बाबा फरीद की वाणी में प्रेम-स्वरूप

गौरव वर्मा

शोधार्थी, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र, भारत

सारांश

पंजाबी और हिंदी सूफी काव्य में हमें एक ऐसा काव्य कालखंड मिलता है, जहां प्रेम को ईश्वर प्राप्त करने का साधन मानकर कवि सूफी रहस्यवाद का उदघाटन अपने काव्य में करते दिखाई पड़ते हैं। अरब से चलते आ रहे इस्लाम से प्रभावित सूफ़ीवद ने जब भारतीय उपमहाद्वीप में प्रवेश किया तब उससे प्रभावित काव्य को सूफी प्रेमाख्यानक काव्य की संज्ञा प्राप्त हुई। सम्पूर्ण भारत और पंजाब के पहले सूफी संत कवि के रूप में हमें बाबा फरीद मिलते हैं। बाबा फरीद ने श्लोक में अपने रहस्यवादी काव्य को प्रस्तुत किया है। बाबा फरीद के काव्य में प्रेम का सच्चा और उत्कृष्ट रूप हमें देखने को मिलता है। बाबा फरीद का यह प्रेम इश्क हकीकी वाला ईश्वरीय प्रेम है। यह प्रेम अत्यंत सच्चा और सरल मार्ग है जिससे ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है। इस प्रेम में परमात्मा को प्राप्त करने की तड़प है और उसे प्राप्त करने योग्य बनने का उपदेश है। लौकिक प्रेम से अलौकिक सत्ता के प्रेम को प्राप्त करना इसकी संपूर्णता है।

मूल शब्द: पंजाबी सूफी काव्य, पंजाबी संत काव्य, प्रेमाख्यानक काव्य, बाबा फरीद की वाणी, प्रेम, सूफी प्रेम, प्रेम का स्वरूप, सूफी रहस्यवाद, बाबा फरीद के श्लोक, इश्क, शेख फरीद, जायसी, पद्मावत, रूमी

प्रस्तावना

उसने तुम्हें स्पर्श किया
तुम्हारे पंख निकल आए
विस्तृत आकाश में उड़ने के लिए

13वी शताब्दी में विद्यमान और फारस में जन्मे सूफी संत जलालूद्दीन रूमी की उपरोक्त पंक्तियाँ प्रेम की ओर इशारा करती हैं। प्रेम स्वतंत्र करता है। जब वह आपको स्पर्श करता है तो आप मुक्त हो जाते हैं, सभी बंधनों से, सभी संकीर्णताओं से, अहंकार के अंधेरे से और स्वार्थ की पराकाष्ठा से। प्रेम में मिलने वाले कष्टों से मन की मलीनता धुल जाती है। प्रेम लोकिक है या लोकिक यदि वह प्रेम है तो वह सृष्टि का सर्वोपरि कर्म है। सृष्टि के केंद्र में केवल प्रेम है। जब तक दो सत्ताओं का मिलन नहीं होता तीसरे की उत्पत्ति असंभव है।

मानुस प्रेम भयहु बैकुंठी, नाही तो काह छार भर मुंठी।

मलिक मुहम्मद जायसी भी अपने प्रेमाख्यानक काव्य 'पद्मावत' में प्रेम को अलोकिक, दिव्य उपाधि देते हुए प्रेम को बैकुंठी बताते हुए बाकी जगत को राख़ कहते हैं।

बाबा शेख फरीद फरीद का पूरा नाम फरीदुद्दीन 'मसऊद शकरगंज' था। बाबा फरीद का जन्म 1173 ईसवी में मुल्तान में हुआ इस संबंध में विभिन्न विद्वान जैसे वीर सिंह (बाबा फरीद सं॰ नामवर सिंह), डॉ॰ रवि कुमार 'अनु' (पंजाबी भाषा और साहित्य का इतिहास), वेद प्रकाश कंबोज (शेख फरीद और उनका रचना संसार), डॉ॰ जयभगवान गोयल (शेख बाबा फरीद और उनका काव्य) आदि विद्वानों ने अपने उल्लेखित ग्रन्थों में सर्वसहमति व्यक्त की है।

संत सूफी फकीर बाबा फरीद की वाणी जिसमे चार शबाद और लगभग सौ के ऊपर श्लोक सम्मीलित हैं, आदि गुरुग्रंथसाहिब में संकलित हैं। वे अपने समय में समाजसुधारक, संत, सूफी फकीर, उपदेशक, धर्मसुधारक सभी कुछ थे और जाते हुये भी वे वाणी जनमानस में वितरित कर गए। श्री गुरु पंचम पातशाह जी ने बाबा फरीद की वाणी आदि गुरुग्रंथ साहिब में सम्मीलित की। इस संबंध में नामवर सिंह जी द्वारा संपादित बाबा फरीद में वर्णन मिलता है।

"शेख़ फरीद जी की छाप वाले चार शबद और सौ से कुछ ऊपर श्लोक श्री गुरुग्रंथसाहिब जी में श्री गुरु पंचम पातशाह जी ने दर्ज किए हैं। शेख़ फरीद जी की पाक पाटन में गद्दी अब तक है, पर इस गद्दी ले आदिकर्ता शेख़ फरीद शक्करगंज के बुजुर्ग पंजाबी नहीं थे। वे अफगानिस्तान के रहने वाले थे।"

बाबा फरीद के बुजुर्ग अफगान थे, काबुल के बादशाह के वंशी फरीद मुल्तान में हुये, मुल्तान पाकिस्तान का क्षेत्र है, ज़ाहिर है की समय और परिस्थिति अफगान के शाही घराने के लिए ठीक नहीं थी और उनके बुज़ुर्गों को पंजाब की और प्रवास करना पड़ा।

कठिन समय से लड़ते हुये फरीद की चेतना को एक नया मार्ग मिल गया। सूफी मार्ग पर, तसव्वुफ़ के रास्ते पर बाबा फरीद ने कदम रखा और कड़ी साधना की। बाबा शेख़ फरीद की गद्दी पाक के पाटन में आज भी है इसका प्रमाण ऊपर दिया गया है। बाबा फरीद का मार्ग प्रेम का मार्ग था। मानव मंगल, मानव कल्याण से अलौकिक सत्ता या आलोकिक प्रेम की ओर जाने वाला रास्ता। बाबा फरीद निश्छल ब्रह्मप्रेम को ही सच्चा प्रेम मानते हैं। परमात्मा से दिल से प्रेम करने वालो के लिए ही यह जगत है, जो पूरी तरह परमात्मा में डूबे हुये हैं उनके अतिरिक्त सभी धरती का बोझ बाबा फरीद को प्रतीत होते हैं। लौकिक शब्द और भावनाओं से निर्मित यह अलौकिक उद्दात्त प्रेम अपनी परमात्मा भक्ति और श्रद्धापूर्ण प्रेम को लेकर कुछ इस प्रकार प्रस्तुत होता है।

दिलहु मुहबति जिन्न सेई सचिआ॥
जिन मनि होरु सि कांढे कचिआ॥1॥
रते इसक खुदाई रंगि दीदार के॥
विसरिआ जिन नामु ते भुई भारू थिए॥1॥ रहाउ॥

बाबा फरीद की वाणी की पहली पंक्ति में 'मुहब्बत' शब्द बाबा फरीद के पूरे काव्य का परिचय मुहब्बत से करा देती है। यह प्रेम 'दिलहु' है। मुख और शरीर का प्रेम नहीं। यह दिल से होता है। और बाबा फरीद कहते हैं जिनके मुख कुछ और अंदर कुछ वे झूठे हैं। जो ऐसा प्रेम करता है वह खुदा या प्रेमी के रंगे-दीदार में मशरूम रहता है। अतिरिक्त जीव धरती के बोझ हैं। बाबा फरीद कबीर की तरह सपाट बयानी हैं। उनकी वाणी जन मानस पर सीधा प्रभाव डालती है। परमात्मा से प्रेम और वो भी निश्छल प्रेम बाबा फरीद को पूजनीय बना गई।

प्रेम के विरह स्वरूप का बहुत अधिक महत्व है। भारतीय प्रेमाख्यानक परंपरा में

भी प्रेम के इस विप्रलंभ शृंगार को बारहमासा में पिरोकर प्रस्तुत या वर्णित किया गया है। बाबा फरीद के काव्य में भी प्रेम के विरह और दुख का वर्णन बड़े सुंदर ढंग से किया गया है।

तपि तपि लुहि लुहि हाथ मरोरउ ॥
बावलि होई सो सहु लोरउ ॥
तै सहि मन महि कीआ रोसु ॥
मुझ अवगन सह नाही दोसु ॥

परमात्मा से बिछड़ी आत्मा खुद को दोष देती हुई स्वयं को कोसती हुई प्रतीत होती है। परमात्मा से विमुख आत्मा प्रेमिका ने परमात्मा पर ध्यान नहीं दिया समय व्यर्थ किया। प्रेमिका यहाँ बावली हो गई है और बिछड़न के दुख से त्रस्त होकर प्रेमिका खुद को दोष देती है और स्वयं को 'मुझ अवगन सह नाही दोसु' कहती है। शब्द चयन और भाव संप्रेक्षण की दृष्टि से काव्य लौकिक और नाटकीय है प्रेमिका हाथ मरोड़ रही है या मल रही है और खुद को कोस रही है।
बाबा फरीद ने अपने काव्य में प्रेम के विभिन्न स्वरूपों का दर्शन कराया है। एक प्रेम खुद को टटोलता है तो दूसरा खुद को कोसता है। प्रेम लौकिक रूप में अलौकिक सत्ता से प्रेम को अभिव्यक्त करता है इसके अलावा प्रेम लोकमंगल, लोककल्याण और अहिंसा का प्रणेता है।

फरीदा जो तै मारनि मुकियां तिना न मारे घूंमि ॥
आपनड़ घरि जाईए पैर तिना दे चुंमि ॥ 7॥

गांधी जी के अहिंसा के सिद्धान्त में एक गाल पर थप्पड़ खाने पर दूसरा गाल आगे करने की आदर्श प्रतिकृया दी गई। प्रेम और अहिंसा समय जितना पुराना हैं। यहाँ फरीद घूसे खाने पर पैर चूमकर अपने घर आने की सलाह देते हैं। प्रेम से ही अहिंसा की उत्पत्ति भी होती है। प्रेम का ही या सहि शब्दों में कहें तो प्रेमी और प्रेमियों में भी सच्चा 'दिलहू' मुहब्बत करने वाले की प्रवृत्ति अहिंसक हो जाती है।
बाबा फरीद संत थे सूफी थे तसव्वुफ़ और परमात्मा प्रेम उनके काव्य में छलकता है साथ ही प्रेम का लौकिक रूप जैसे योवन, केश, समय का ध्यान प्रेम में आना। बाबा फरीद एक मंझे हुए प्रेमी थे वे प्रेम की हर दशा जानते थे। प्रेम में होने वाले विभिन्न क्रिया-प्रतिक्रियाओं और उनके महत्व को वे जानते थे, समझते थे और समझाते भी थे।

फरीदा काली जिनी न राविआ धउली रावै कोई ॥
करि साई सिउ पिरहड़ि रंगु नवेला होई ॥ 12॥

बाबा फरीद की उपरोक्त पंक्तियों से यह आभास होता है कि शायद बाबा फरीद का अलौकिक प्रेम धरातल पर आकर रूप-रंग और काले-सफ़ेद का भेद करने लगता है। फरीद जी स्वयं से कहते हैं कि जब योवन में काले बालों के साथ प्रेम या इश्क नहीं किया तो अब क्या बुढ़ापे में प्रेम करेगा। वे समझ रहे हैं और समझा रहे हैं कि अभी सम्हाल लो वरना मेरी तरह बुढ़ापे में अफसोस होगा। गुरु अमरदास इस श्लोक पर टिप्पणी कुछ इस प्रकार करते हैं।

॥ म: 3 ॥ फरीदा काली धउली साहिबु सदा है जे को चिति करे ॥
आपण लाइया पिरमु न लगई जे लोचे सभु कोई ॥
एहु पिरमु पिआला खसम का जै भावै तै देई ॥ 13 ॥

आदि गुरुग्रंथसाहिब में बाबा फरीद के 12वे श्लोक के ऊपर अमरदास जी की उपरोक्त टिप्पणी शायद इसी लिए भी आवश्यक हुई क्योंकि यह एक धार्मिक ग्रंथ है एक आबादी ग्रंथ साहिब से भविष्य में सीख लेगी। एक अच्छे टिप्पणीकार ने समय के पलड़े में रख बात में भेद पाया होगा। मन्तव्य बाबा फरीद का भी सतर्क करना था न कि भेदभाव। वे स्वयं अपना उदाहरण दे रहे हैं । परंतु ईश्वर के लिए या परमात्मा के लिए शरीर से जुड़ी किसी विशेषता का कोई महत्व नहीं वहाँ 'दिलहू' ही पर्याप्त और सम्पूर्ण है।
प्रेम की कसौटियों का ब्योरा देते हुए बाबा फरीद प्रेम के उस स्वरूप की संकल्पना करते हैं जहाँ लोभ का कोई स्थान नहीं है। प्रेम में लोभ का कोई स्थान नहीं है। लाभ और हानी की बातें व्यापार में चलती है। इस बात से बिलकुल इंकार नहीं किया जा सकता कि जहाँ प्रेम है वहाँ लोभ का कोई स्थान नहीं है।

फरीदा जा लाबु ता नेहु किआ लबु त कूड़ा नेहु ॥
किचरु झति लघाईऐ छपरि तुटै मेहु ॥ 18 ॥

बाबा फरीद कहते है जी जहाँ प्रेम है वहाँ लोभ नहीं होगा और जहाँ लोभ है ऐसा प्रेम कूड़ा है। बाबा फरीद की रचनात्मक शक्ति लोभ को तेज वर्षा में टूटा छप्पर बना देते हैं। ग्रामीण लोकजीवन को प्रेम की शब्दशैली में पिरोकर बाबा फरीद एक प्राचीन स्वर्णिम कवि हो जाते हैं। सजग सूफी संत के साथ बाबा फरीद बहतरीन रचनात्मक कवि भी सिद्ध हुए।
बाबा फरीद का प्रेम विभिन्न स्वरूपों में अभिव्यक्त हुआ। उनका प्रेम 'दिलहू', निश्छल, निर्मल और बिना किसी लोभ है। बाबा फरीद की वाणी का अध्ययन आगे बढ़ने पर उनके प्रेम की सर्वश्रेष्ठ प्रतिभा या गुण सामने आता है। बाबा फरीद के प्रेम का स्वरूप एकनिष्ठ है। प्रमाण के लिए निम्न पंक्तियों का अध्ययन पर्याप्त है

फरीदा राती वडीआं धुखि धुखि उठनि पास ॥
धिगु तिना दा जीविआ जिना विडाणी आस ॥ 21 ॥

फरीद कहते हैं रात लंबी हो गई है पूरा शरीर दुखता है। प्रियतम से बिछड़ के कष्टों की रातों में जो अपने प्रियतम से विमुख हो दूसरों से आस बांधता है ऐसे प्रेमी या प्रेमिका के जीवन पर धिक्कार है। यह प्रेम का प्रगड़ एकनिषठ स्वरूप है जो बाबा फरीद के प्रेम स्वरूप को बैकुंठि बना देता है। कहीं न कहीं इस एकनिष्ठ यह प्रेम सूफी के एकेश्वरवाद को भी साफ करता चलता है।
प्रेम के स्वरूप को अभिव्यक्त करते हुए बाबा फरीद फरीद यह भी कहते हैं कि प्रेम बेपरवाह है लोभ-हानी, सतर्कता-सावधानी प्रेम में नहीं बरती जाती जब हो गया तो अंत में प्रियतम से मिलके सब ठीक हो जाएगा। इस कथन को बाबा फरीद की निम्न पंक्तियों द्वारा अभिव्यक्त किया जा सकता है।

भिजउ सिजउ कंबली अलह वरसत मेहु ॥
जाई मिला तिना सजण तुटउ नाही नेहु ॥ 25 ॥

फरीद कह रहे हैं कि कंबली या ओढ़नी भीज रही है और मेघ बरस रहें हैं। प्रेमिका बेपरवाह है उसे बीएस यह लगी है कि उसका प्रेम अमर हो जाए। बाबा फरीद की आत्मा रूपी प्रेमिका अपने वस्त्र शरीर की सुध खो बैठी है और उसे अपने प्रियतम परमात्मा से मिलन का पूरा भरोसा है। अतः अब वह निश्चिंत है।
बाबा फरीद का प्रेम अलौकिक होने के कारण निश्चिंत है। वस्तु जगत से उसका कोई मोह नहीं। इस प्रेम का अंत बाबा फरीद भली भाति जानते हैं। मिलन-आनंद और संपूर्णता यही इस प्रेम का अंत है।
जिस प्रकार गुरु अमरदास जी ने काले-सफ़ेद और योवन-बुढ़ापे के संबंध में बाबा फरीद के श्लोक पर टिप्पणी की उसी प्रकार गुरुनानक जी नें भी फरीद को स्त्री के संबंध में टिप्पणी कर चेताया है।

साहुरै ढोई ना लहै पेईऐ नाही थाउ ॥
पिरु वातड़ी न पुछई धन सुहागणी नाउ ॥ 31 ॥

बाबा फरीद यहाँ कहते हैं कि जिस जीव-स्त्री की पूछ न ससुराल में है, न पीहर में है और ना ही पति उसे पूछता है, ऐसी स्त्री सुहागिन कैसे हुई। इसपर टिप्पणी करते हुए नानक जी लिखते हैं –

साहुरै पेईऐ कंत की कंतु अंगमु अथाहु ॥
नानक सो सोहागणी जु भावै बेपरवाह ॥ 32 ॥

बाबा फरीद स्त्री और पीहर-ससुराल या पति इनमें फसकर स्त्री को कठघरे में खड़ा करते हैं। उनके कहने का तात्पर्य शायद प्रेम के नगण्य होने से था। नानक जी बाबा फरीद के इस श्लोक पर टिप्पणी करते हैं कि दुल्हन-आत्मा-जीव-स्त्री कहीं भी हो वह सदैव पति-परमात्मा की है। परवाह को 'बेपरवाह' करके नानक ने सुहागिन हर सूरत में सुहागिन कर दी। परमात्मा के सभी जीव हैं चाहे वे जहाँ हो, जैसे हो और वे सदा परमात्मा की कृपा भागी हैं।

बाबा फरीद ने प्रेम से उपजे विरह को महत्वपूर्ण बताया। बाबा फरीद इस विरह का मूर्तिकरण करके इसे सम्माननीय बादशाह की उपाधि प्रदान करते हैं। प्रेम के ऐसे विराट और निर्मल स्वरूप के दर्शन निम्न पंक्तियों में किए जा सकते हैं।

बिरहा बिरहा अखिए बिरहा तू सुल्तानु ॥
फरीदा जितु तनि बिरहु ण ऊपजे सो तन जाणु मसान ॥ 36 ॥

बाबा फरीद जी इन पंक्तियों के कारण आदि-सूफी-संत-कवि बन जाते हैं। इन पंक्तियों के संबंध में जितनी तारीफ की जाए कम है । 'बिरहा तू सुल्तानु' की संज्ञा देकर प्रेम के विरह और दुख का महत्व सर्वाधिक हो जाता है। लय और तुक तो एकदूसरे के पूरक हैं ही साथ ही विरह पर ज़ोर देते हुए शमशान या 'मसान' शब्द का प्रयोग प्रेम मे विरह के महत्व को उसी प्रकार इंगित करता है जैसे शरीर प्रेम है तो विरह आत्मा या प्राण। प्रेम में विरह का अपना खासा महत्व है। प्रेम में प्रियतम-प्रियतमा दूर होकर भी विरह में नहीं हैं, तब हमें वापस विचार कर लेना चाहिए की प्रेम क्या है।

बाबा फरीद के संबंध में और उनके प्रेम की मनोदशाओं के संबंध में वेद प्रकाश जी द्वारा संपादित पुस्तक 'शेख फरीद और उनका रचना संसार' के निम्न वक्तव्य का उल्लेख अपेक्षित है।

"सूफी काव्य का मूलाधार प्रेम है। सूफी-साधक आत्मा और परमात्मा का मिलन प्रेम से ही संभव मानते हैं। परमात्मा को पाने के लिए आत्मा जिस बेचैनी और व्याकुलता का अनुभव करती है, सूफी कवि उसका वर्णन सांसरिक प्रेम के विभिन्न मनोदशाओं जैसा ही करता है। प्रेमी और प्रियतम के लौकिक प्रेम द्वारा ही उस अलौकिक प्रेम की अभिव्यक्ति करने के अलावा और कोई उपाय भी तो नहीं।"

बाबा फरीद ने प्रेम की लगभग सभी मनोदशाओं को खूबसूरती से अपने परमात्मा प्रेमकाव्य में पिरोया है। उनकी रचनात्मकता, शब्दचयन, शैली, बुनावट, लय-तुक, और वर्णनात्मकता बहुत सराहनिय है। बाबा फरीद जी नें सूफीप्रेम को प्रेम की लगभग प्रत्येक लौकिक दशा में प्रस्तुत किया है। उनकी प्रेमिका या आत्मा प्रेम के हर गुण से सम्पन्न है। बाबा फरीद का कल्याणकारी प्रेम का स्वरूप एकनिष्ठ, निर्मल, विराट, भावपूर्ण, निश्छल और निष्कपट है। प्रेम की संपूर्णता प्रेम के दोनों पक्षो से है मिलन, विरह। विरह प्रेम की आत्मा है।

बाबा फरीद के काव्य में प्रेम का लौकिक-अलौकिक स्वरूप विभिन्न रंगों को लिए दिखाई देता है। बाबा फरीद परमात्मा के सच्चे प्रेमी हैं। बाबा फरीद अपने काव्य में प्रेम की विभिन्न कसौटियाँ प्रस्तुत करते हैं। वे अपने परमात्मा को निर्दोष कह कर खुद को कटघरे में खड़ा कर लेते हैं।

आज के समय में प्रेम दलदल में धंस चुका है। शायद कुछ फीसदी को छोड़े तो हमारा प्रेम 'लव' है। ये प्रेम नहीं दरअसल प्रेम का शव है। विरह अब फिल्मी है। मानव जुल्मी है। यदि समाज में अभी किसी काव्य की आवश्यकता है तो इसकी। जो प्रेम के सही स्वरूप से जनमानस तक पाहुचा सके। मानव धर्म-जाती-नस्ल में उलझा है। प्रेमी तेजाब लिए घूम रहे हैं। शायद इस समाज को इतिहास के सूफी आएने से कुछ सीखना चाहिए। लोक-कल्याण और लोकमंगल के लिए प्रेम का हर जनमानस में पनपना आवश्यक है। यह सत्य है की सृष्टि बिना प्रेम के असंभव है। आकर्षण से परिवर्तन का सिलसिला शुरू होता है। प्रेम इस सिलसिले का ईंधन है। प्रेम के स्वरूप और अर्थ को बिना जाने यह दूसरे रास्ते पर ले जा रहा है। यह परिवर्तन दूषित हो सकता है।

संदर्भ

1. रूमी, सं॰ विश्वनाथ. (2018). सूफी संत रूमी सूफियाना कलाम, दिल्ली: राजपाल एण्ड संज़, पृ॰ स॰-35
2. जायसी, सं॰ माताप्रसाद गुप्त. (2006). पद्मावत, इलाहाबाद: साहित्य भवन, पृ॰166
3. बाबा फरीद, सं॰ नामवर सिंह. (2003). बाबा फरीद, दिल्ली: अनामिका, पृ॰11
4. वही, पृ॰19
5. वही, पृ॰22
6. वही, पृ॰27